अध्याय V

निष्कर्ष एवं सुझाव

5.1 भूमिका

5.2 अध्ययन के उद्देश्य

5.3 परिकल्पना

5.4 समस्या के मुख्य परिणाम

5.5 निष्कर्ष

5.6 सुझाव

5.7 भविष्य के लिए सुझाव

संदर्भग्रन्थ सूची

परिशिष्ट

लिंग–भेद पर आधारित कार्य–विभाजित चित्र

कार्य–विभाजन परीक्षण

अध्याय V

निष्कर्ष एवं सुझाव

5.1 भूमिका :–

सारांश किसी भी अध्याय को संक्षिप्त करने का प्रयास होता है। जिसके द्वारा अध्याय को संक्षिप्त व सरल रूप में समझा जा सके। इस अध्याय में लघु शोध का सारांश एवं अध्याय चार में दिए गये प्रदत्तों के विश्लेषण से प्राप्त निष्कर्ष को प्रस्तुत किया गया है। साथ ही अध्ययन के आगे संबंधित अध्ययन को विभिन्न क्षेत्रों में करने के लिए सुझाव भी देने का प्रयास किया गया है।

लिंग–भेद समानता को बढ़ावा देने के लिए शिक्षा में किस प्रकार के सुधार कार्य–विभाजन में करने चाहिए इसका भी विश्लेषण किया गया है।

5.2 अध्ययन के उद्देश्य :–

1. कक्षा आठवीं के विधार्थियों में लिंग–भेद पर आधारित कार्य–विभाजन संबंधी दृष्टिकोण को जानना।
2. कक्षा–आठवीं के छात्र एवं छात्राओं में लिंग–भेद पर आधारित कार्य–विभाजन संबंधी दृष्टिकोण के अंतर को जानना।
3. कक्षा–आठवीं के ग्रामीण एवं शहरी विधार्थियों में लिंग–भेद पर आधारित कार्य–विभाजन संबंधी दृष्टिकोण के अंतर को जानना।

5.3 परिकल्पनाएँ:–

1. कक्षा आठवीं के विधार्थियों में लिंग–भेद पर आधारित में कार्य–विभाजन संबंधी दृष्टिकोण में बदलाव आ रहा है।

2. कक्षा आठवीं के छात्र एवं छात्राएं में लिंग–भेद पर आधारित कार्य–विभाजन संबंधी दृष्टिकोण में सार्थक अंतर नहीं है।
3. कक्षा आठवीं के ग्रामीण एवं शहरी विधार्थियों में लिंग–भेद पर आधारित कार्य–विभाजन संबंधी दृष्टिकोण में सार्थक अंतर नहीं है।

5.4 समस्या के मुख्य परिणाम :–

1. कक्षा आठवीं के छात्रों में विद्यार्थियों में लिंग–भेद पर आधारित कार्य–विभाजन संबंधी दृष्टिकोण में बदलाव आ रहा है।
2. कक्षा आठवीं के छात्र एवं छात्रा में लिंग–भेद पर आधारित कार्य–विभाजन संबंधी दृष्टिकोण में सार्थक अंतर नहीं है।
3. कक्षा आठवीं के ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों में लिंग–भेद पर आधारित कार्य–विभाजन संबंधी दृष्टिकोण में सार्थक अंतर है।

5.5 निष्कर्ष:–

कक्षा आठवीं के विद्यार्थियों की लिंग–भेद पर आधारित कार्य–विभाजन परीक्षण के बाद यह निष्कर्ष निकला गया कि छात्र एवं छात्राओं के लिंग–भेद पर आधारित कार्य–विभाजन संबंधी दृष्टिकोण में बदलाव आ रहा है। कारण यह हो सकता है कि आधुनिक समाज में स्त्री वो सभी कार्य कर रही है जो पहले पुरूष ही करते थे। जैसे पुलिस, मिलेटरी में महिला को नहीं लिया जाता था, आज लिया जा रहा है। पहले स्त्री गृह कार्य ही करती थी आज व्यवसाय कार्य भी कर रही है।

कक्षा आठवीं के छात्र एवं छात्राओं में लिंग–भेद पर आधारित कार्य–विभाजन संबंधित दृष्टिकोण में सार्थक अंतर नहीं है। कारण यह हो सकता है कि आज बचपन से ही विद्यार्थियों में पक्षपात रहित व्यवहार हो रहा है। जो कार्य पुरूष कर रहे है वही कार्य स्त्रियों को भी दिया जा रहा है। जिसका विशेष प्रोत्साहन टी.वी. चैनलों, कम्प्युटर, अभिभावकों से

मिल रहा है। शिक्षा की वजह से स्त्री भी बाहर के कार्य करने लगी है जिससे लिंग–भेद पर आधारित कार्य–विभाजन की रेखा कुछ अस्पष्ट हो गई है। यह पूरी तरह बदली तो नहीं है परन्तु इसमें परिवर्तन आना शुरू हो गया है। स्त्री और पुरूषों की सामाजिक भूमिका में इससे परिवर्तन होने लगा है।

विद्यार्थियों को ग्रामीण एवं शहरी दो भागों में विभाजित किये जाने पर लिंग–भेद पर आधारित कार्य–विभाजन परीक्षण द्वारा ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के दृष्टिकोण में सार्थक अंतर पाया गया। ग्रामीण छात्रों की अपेक्षा शहरी छात्रों में लिंग–भेद पर आधारित कार्य–विभाजन संबंधी दृष्टिकोण में बदलाव ज्यादा पाया गया कारण यह हो सकता है कि शहरी क्षेत्र से ग्रामीण क्षेत्र में अभिभावकों को कम जानकारी, टेक्नोलॉजी का विकास एवं रूढ़िगत मान्यता पर ज्यादा विश्वास है।

अंततः हम इस अध्ययन द्वारा यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं। कि विद्यार्थियों की लैगिंक कार्य–विभाजन संबंधी समानता के दृष्टिकोण को ओर बढ़ाने की आवश्यकता है।

5.6 सुझावः–

बच्चों में 12 साल से मानसिक, सामाजिक और भाषिक विकास अधिक होता है और उस समय बच्चों के साथ 'लिंग पक्षपातपूर्ण' व्यवहार होता है तो उसका नकारात्मक असर लंबे समय तक रहता है।

आधुनिक युग में प्रत्येक क्षेत्र में शिक्षा और तकनीकी के कारण प्रत्येक क्षेत्र में जागरूकता दिखाई देती है। सामाजिक आर्थिक राजनीतिक शैक्षिक क्षेत्रों में लिंग समानता और लिंग हितेच्छुकता को महत्व दिया जा रहा है। इस कारण विद्यार्थियों के दृष्टिकोण में परिवर्तन आया है फिर भी

हमारी परंपरा, संस्कृति, रीति-रिवाज के कारण अभी भी विद्यार्थियों में व्यवहार और दृष्टिकोण में जाने अंजाने बच्चों में अभी भी लिंग-भेद पर आधारित कार्य-विभाजन में पक्षपात दिखाई देता है।

प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्ता ने पाया की विद्यार्थियों में लिंग-भेद पर आधारित कार्य-विभाजन संबंधी दृष्टिकोण में बदलाव पाया जा रहा है। अभी भी ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों के दृष्टिकोण में बदलाव कम पाया गया। निम्न रूप से अधिक बढ़ावा देना आवश्यक है।

1. महिला, पुरूषो में भेदभाव के पूर्वाग्रह से मुक्त होकर व्यावसायिक तकनीकी और पंरांगत शिक्षा के सभी स्तरों पर महिलाओं को शामिल करना। इसके लिए लड़कियों के लिए सभी स्कूलों में विज्ञान और गणित की पढ़ाई प्रारंभ करके सुढ़ठ बनायी जानी चाहिये। इसके स्कूलों में अध्यापिकाओं की कमी को पूरा करने के लिए विशेष प्रयास किये जाने चाहिए।
2. राजनीतिक क्षेत्रों के प्रति विद्यार्थियों में नकारात्मक दृष्टिकोण नहीं रखना चाहिए। राजनीति में लड़कियाँ भी सफल हो सकती है। इसलिए लड़कियों को इस क्षेत्र में अभिरूचि है और मौका मिलता है तो उसको जरूर प्रोत्साहन देना चाहिए।
3. माता-पिता को बच्चों के शैक्षिक भविष्य के लिए उसकी क्षमता, बुद्धि और अभिरूचि को ध्यान में रखकर बच्चों को समान प्रोत्साहन देना चाहिए। लिंग के आधार पर शैक्षिक क्षेत्रों का वर्गीकरण नहीं करना चाहिए। उदाहरण 'नर्स' लड़की बन सकती है और लड़ने को पायलट बनना चाहिए।
4. घरेलू कार्य-विभाजन जैसे खाना पकाना झाड़ू बर्तन आदि स्त्री का विषय है और घर के बाहर के कार्य जैसे बाजार की खरीदी

व्यवसायिक कार्य आदि पुरूषों के काम है। ऐसे अभिवृत्ति नहीं रखनी चाहिए। स्त्री पुरूष दोनों की क्षमता, अभिरूची और कौशल के आधार पर कार्यो का वर्गीकरण करना चाहिए।

5. माता–पिता को विद्यार्थियों के खाने–पीने और कपड़े पहनने के विषय में समानता रखनी चाहिए। बच्चों की पसंदगी को महत्व देना चाहिए।

6. विद्यालय में एक आम बच्चे के समान रहना सीखना चाहिए।

7. शिक्षकों के बारे में तो कैसे वे पक्षपात आते हैं कैसे यह पक्षपात जानबूझकर नहीं बल्कि आम जीवन का एक हिस्सा लगता है। अभी भी लोग बिना जाने पारंपरिक व्यवहार लाते है और उन्हें पता नहीं होता कि यह पक्षपात पूर्ण व्यवहार है।

8. पाठ्यपुस्तकों में भाषा के इस्तेमाल में यह ध्यान रखना चाहिए कि हमारी भाषा स्त्री लिंग–भेद से प्रभावित तो नहीं है।

5.7 भविष्य के लिए सुझावः–

शोधकर्ता को अध्ययन के अंतर्गत कई प्रश्न सामने आये जिस पर भविष्य में शोध किया जा सकता है।

1. विद्यालयों में लिंग–भेद पर आधारित कार्य–विभाजन में समाज का दृष्टिकोण क्या है ?

2. लिंग–भेद आधारित शिक्षकों की अभिवृत्ति क्या है ?

3. लिंग–भेद पर आधारित विद्यालय एवं वर्ग खण्डों में कैसा व्यवहार देखने को मिलता है ?

4. विद्यार्थियों के अभिभावकों का लिंग–भेद के प्रति दृष्टिकोण कैसा है।

5. विद्यालयों में विद्यार्थियों के बीच परस्पर लिंग–भेद आधारित भाषा प्रयुक्त की जाती है क्या वहाँ लिंग–भेद देखने को मिलता है?

6. क्या लिंग–भेद को ध्यान में रखते हुये पाठ्यक्रम का निर्माण किया जाता है?

7. क्या लिंग–भेद पर आधारित कार्य–विभाजन में विद्यार्थियों तथा शिक्षकों के दृष्टिकोण में कोई अंतर है?